

रविवार 19 अप्रैल, 2026

## विषय — प्रायश्चित्त का सिद्धांत

स्वर्ण पाठः मत्ती 10: 8

"बीमारों को चंगा करो: मरे हुआं को जिलाओ: कोढियों को शुद्ध करो: दुष्टात्माओं को निकालो: तुम ने सेंटमेंत पाया है, सेंटमेंत दो।"

उत्तरदायी अध्ययनः 1 यूहन्ना 1: 1, 3-5

1 यूहन्ना 3: 1-3

- 1 उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से था, जिसे हम ने सुना, और जिसे अपनी आंखों से देखा, वरन जिसे हम ने ध्यान से देखा; और हाथों से छूआ।
- 3 जो कुछ हम ने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिये कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।
- 4 और ये बातें हम इसलिये लिखते हैं, कि हमारा आनन्द पूरा हो जाए॥
- 5 जो समाचार हम ने उस से सुना, और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है; कि परमेश्वर ज्योति है: और उस में कुछ भी अन्धकार नहीं।
- 1 देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भी: इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उस ने उसे भी नहीं जाना।
- 2 हे प्रियों, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।
- 3 और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है।

### पाठ उपदेश

#### बाइबल

#### 1. मत्ती 4: 23-25

- 23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।
- 24 और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं और मिर्गी वालों और झोले के मारे हुआं को उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया।
- 25 और गलील और दिकापुलिस और यरूशलेम और यहूदिया से और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली॥

## 2. मत्ती 5: 1-12, 48

- 1 वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया तो उसके चले उसके पास आए।
- 2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,
- 3 धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
- 4 धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे।
- 5 धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
- 6 धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।
- 7 धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।
- 8 धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।
- 9 धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।
- 10 धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
- 11 धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हरो विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें।
- 12 आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था॥
- 48 इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है॥

## 3. मत्ती 12: 22-28, 46-50

- 22 तब लोग एक अन्धे-गूंगे को जिस में दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए; और उस ने उसे अच्छा किया; और वह गूंगा बोलने और देखने लगा।
- 23 इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, यह क्या दाऊद की सन्तान का है?
- 24 परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।
- 25 उस ने उन के मन की बात जानकर उन से कहा; जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है, और कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है, बना न रहेगा।
- 26 और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य क्योंकर बना रहेगा?
- 27 भला, यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारे वंश किस की सहायता से निकालते हैं? इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे।
- 28 पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है।
- 46 जब वह भीड़ से बातें कर ही रहा था, तो देखो, उस की माता और भाई बाहर खड़े थे, और उस से बातें करना चाहते थे।
- 47 किसी ने उस से कहा; देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, और तुझ से बातें करना चाहते हैं।
- 48 यह सुन उस ने कहने वाले को उत्तर दिया; कौन है मेरी माता?

- 49 और कौन है मेरे भाई? और अपने चेलों की ओर अपना हाथ बढ़ा कर कहा; देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं।
- 50 क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई और बहिन और माता है॥

#### 4. यूहन्ना 10: 23-31

- 23 और यीशु मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में टहल रहा था।
- 24 तब यहूदियों ने उसे आ घेरा और पूछा, तू हमारे मन को कब तक दुविधा में रखेगा? यदि तू मसीह है, तो हम से साफ कह दे।
- 25 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं ने तुम से कह दिया, और तुम प्रतीति करते ही नहीं, जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ वे ही मेरे गवाह हैं।
- 26 परन्तु तुम इसलिये प्रतीति नहीं करते, कि मेरी भेड़ों में से नहीं हो।
- 27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।
- 28 और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।
- 29 मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।
- 30 मैं और पिता एक हैं।
- 31 यहूदियों ने उसे पत्थरवाह करने को फिर पत्थर उठाए।

#### 5. यूहन्ना 13: 1

- 1 फसह के पर्व से पहिले जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊँ, तो अपने लोगों से, जो जगत में थे, जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा।

#### 6. यूहन्ना 17: 1, 3, 4, 13, 19, 20, 22, 25, 26

- 1 यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखे आकाश की ओर उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।
- 3 और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने।
- 4 जो काम तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।
- 13 परन्तु अब मैं तेरे पास आता हूँ, और ये बातें जगत में कहता हूँ, कि वे मेरा आनन्द अपने में पूरा पाएं।
- 19 और उन के लिये मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएं।
- 20 मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों।
- 22 और वह महिमा जो तू ने मुझे दी, मैं ने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे की हम एक हैं।
- 25 हे धार्मिक पिता, संसार ने मुझे नहीं जाना, परन्तु मैं ने तुझे जाना और इन्होंने भी जाना कि तू ही ने मुझे भेजा।
- 26 और मैं ने तेरा नाम उन को बताया और बताता रहूँगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था, वह उन में रहे और मैं उन में रहूँ॥

## 7. मत्ती 6: 13 (के लिए)

<sup>13</sup> क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन।

## विज्ञान और स्वास्थ्य

### 1. 18: 1-14 (से ,)

प्रायश्चित्त परमेश्वर के साथ मनुष्य की एकता का उदाहरण है, जिससे मनुष्य ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम को दर्शाता है। नासरत के यीशु ने पिता के साथ मनुष्य की एकता को सिखाया और प्रदर्शित किया, और इसके लिए हम उसे अंतहीन श्रद्धांजलि देते हैं। उनका मिशन व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों था। उन्होंने जीवन का काम न केवल स्वयं के प्रति न्याय में, बल्कि मनुष्यों पर दया करने में भी किया — उन्हें यह दिखाने के लिए कि उन्हें अपना काम कैसे करना है, लेकिन यह उनके लिए नहीं करना है और न ही उन्हें किसी भी जिम्मेदारी से मुक्त करना है। यीशु ने निर्भकता से, इंद्रियों के मान्यता प्राप्त सबूतों के खिलाफ, फरिसासिक पंथों और प्रथाओं के खिलाफ काम किया, और उन्होंने अपनी उपचार शक्ति के साथ सभी विरोधियों का खंडन किया।

मसीह का प्रायश्चित्त मनुष्य को परमेश्वर से मिलाता है, परमेश्वर को मनुष्य से नहीं; क्योंकि मसीह का दैवीय तत्व ही परमेश्वर है,

### 2. 136: 1-10 (से .)

यीशु ने अपने चर्च की स्थापना की और मसीह-उपचार की आध्यात्मिक नींव पर अपने मिशन को बनाए रखा। उन्होंने अपने अनुयायियों को सिखाया कि उनके धर्म में एक दिव्य सिद्धांत है, जो त्रुटि को बाहर निकालता है और बीमार और पापी दोनों को ठीक करता है। उन्होंने दावा किया कि कोई भी खुफिया, कार्रवाई, और न ही जीवन भगवान से अलग है। अपने ऊपर आए उत्पीड़न के बावजूद, उसने शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से पुरुषों को बचाने के लिए अपनी दिव्य शक्ति का इस्तेमाल किया।

तब भी और अब भी यही प्रश्न है कि यीशु ने बीमारों को कैसे चंगा किया? इस प्रश्न के उनके उत्तर को दुनिया ने अस्वीकार कर दिया।

### 3. 315: 3-20

हमारे मास्टर के उस कहने ने उन्हें रब्बी के विद्वान धर्मशास्त्र से अलग कर दिया कि "मैं और मेरे पिता एक हैं"। भगवान के बारे में उनकी बेहतर समझ उनके लिए एक प्रतिघात थी। एक मन का जानता था और किसी अन्य के लिए कोई दावा नहीं करता था। वह जानता था कि शरीर के बदले अहंकार मन था और वह पदार्थ, पाप और बुराई मन नहीं थे; और इस दिव्य विज्ञान के बारे में उनकी समझ ने उन्हें उम्र का आधार बना दिया।

लोगों के विपरीत और झूठे विचारों ने उनकी भावना से, परमेश्वर के साथ मसीह के पुत्रत्व को छिपा दिया वे उसके आध्यात्मिक अस्तित्व को समझ नहीं पाए। उनके कार्तिक मन इसके शत्रु थे। उनके विचारों को नश्वर त्रुटि के साथ भरा गया था, बजाय भगवान के आध्यात्मिक विचार के साथ जो मसीह यीशु द्वारा प्रस्तुत किया गया था। भगवान

की समानता जिससे हम पाप के माध्यम से दृष्टि खो देते हैं, जो सत्य के आध्यात्मिक अर्थ को उद्धाटित करता है; और हम इस समानता का एहसास तभी करते हैं जब हम पाप को कम करते हैं और मनुष्य की विरासत को साबित करते हैं, भगवान के बेटों की स्वतंत्रता।

#### 4. 273: 24-28

यीशु लहरों पर चले गए, भीड़ को खिलाया, बीमारों को चंगा किया और भौतिक कानूनों के विरोध में मृतकों को उठाया। उनके कार्यों में विज्ञान का प्रदर्शन था, भौतिक बोध या कानून के झूठे दावों पर काबू पाने से।

#### 5. 26: 10-18

मसीह आत्मा था जिसे यीशु ने अपने बयानों में निहित किया था: "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ;" "मैं और पिता एक हैं।" यह मसीह, या यीशु की दिव्यता, उसकी दिव्य प्रकृति थी, जो उसे अनुप्राणित करती थी। ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम ने पाप, बीमारी और मृत्यु पर यीशु को अधिकार दिया। उनका मिशन आकाशीय विज्ञान को प्रकट करना था, यह साबित करने के लिए कि ईश्वर क्या है और वह मनुष्य के लिए क्या करता है।

#### 6. 337: 7-10

सच्ची खुशी के लिए, मनुष्य को अपने सिद्धांत, दिव्य प्रेम के साथ सामंजस्य करना चाहिए; पुत्र को पिता के अनुरूप होना चाहिए, मसीह के अनुरूप होना चाहिए।

#### 7. 40: 25-7

हमारे स्वर्गीय पिता, दिव्य प्रेम, मांग करते हैं कि सभी पुरुषों को हमारे गुरु और प्रेरितों के उदाहरण का पालन करना चाहिए न कि केवल उनके व्यक्तित्व की पूजा करनी चाहिए। यह दुखद है कि वाक्यांश ईश्वरीय सेवा आम तौर पर दैनिक कर्मों के बजाय सार्वजनिक पूजा का मतलब है।

ईसाई धर्म की प्रकृति शांतिपूर्ण और धन्य है, लेकिन राज्य में प्रवेश करने के लिए, आशा के लंगर को शकीना में सामग्री के घूंघट से परे डाल दिया जाना चाहिए जिसमें यीशु हमारे जाने से पहले चला गया है; और सामग्री से परे यह उन्नति धर्मियों की खुशियों और विजय के साथ-साथ उनके दुखों और कष्टों से भी होनी चाहिए। अपने गुरु की तरह, हमें भौतिक अर्थों में होने के आध्यात्मिक अर्थ से प्रस्थान करना चाहिए।

#### 8. 19: 17-28

पश्चाताप और पीड़ा के हर दर्द, सुधार के लिए हर प्रयास, हर अच्छा विचार और काम, हमें पाप के लिए यीशु के प्रायश्चित्त को समझने और उसकी प्रभावकारिता की सहायता करने में मदद करेगा; लेकिन अगर पापी प्रार्थना और पश्चाताप करना, पाप करना और क्षमा करना जारी रखता है, तो उसके पास प्रायश्चित्त में बहुत कम हिस्सा है, — परमेश्वर के साथ एकता में, - क्योंकि उसके पास व्यावहारिक पश्चाताप का अभाव है, जो हृदय को सुधारता है और मनुष्य को ज्ञान की इच्छा करने में सक्षम बनाता है। जो लोग प्रदर्शन नहीं कर सकते, कम से कम भाग में, हमारे गुरु की शिक्षाओं और अभ्यास के दिव्य सिद्धांत का भगवान में कोई हिस्सा नहीं है। यदि उसके प्रति अवज्ञा में रहते हैं, तो हमें कोई सुरक्षा महसूस नहीं करनी चाहिए, हालांकि भगवान अच्छा है।

## 9. 38: 10-14, 18-20

यीशु ने कहा: "ये निशानियाँ उनके साथ होंगी जो विश्वास करेंगे; ... वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे ठीक हो जाएँगे।" कौन उन पर विश्वास करता है? वह अपने शिष्यों से बात कर रहे थे, फिर भी उन्होंने यह नहीं कहा, "ये निशानियाँ तुम्हारे साथ होंगी," बल्कि उनके साथ होंगी— "जो विश्वास करेंगे" आने वाले हर समय में।... एक और समय यीशु ने प्रार्थना की, सिर्फ़ बारह के लिए नहीं, बल्कि उन सभी के लिए जो "उनके वचन से" विश्वास करेंगे।

## 10. 496: 9 (हम्म)-19

हम सभी को यह सीखना चाहिए कि जीवन ईश्वर है। अपने आप से पूछें: क्या मैं उस जीवन को जी रहा हूँ जो सर्वोच्च भलाई के लिए है? क्या मैं सत्य और प्रेम की उपचार शक्ति का प्रदर्शन कर रहा हूँ? यदि ऐसा है, तो रास्ता उज्ज्वल हो जाएगा "पूरे दिन तक।" आपका फल यह साबित करेगा कि परमेश्वर की समझ मनुष्य को क्या लाती है। शाश्वत रूप से इस विचार पर दृढ़ रहें, - कि यह आध्यात्मिक विचार है, पवित्र आत्मा और मसीह, जो आपको वैज्ञानिक निश्चितता के साथ, अपने ईश्वरीय सिद्धांत, प्रेम, अंतर्निहित, अतिव्यापी, और सभी को शामिल करने के आधार पर प्रदर्शित करने में सक्षम बनाता है।

### दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

### दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

### उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

## चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

### कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

## चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6